नमाज़ की अहमियत व फ़ज़ीलत

'स़लात' या'नी नमाज़ अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला की इ़बादत का एक ख़ास़ अंदाज़ है। ये एक ऐसी इ़बादत है जिसमें इन्सान का जिस्म और रूह़ दोनों शामिल होती हैं। इसमें क़याम है, रुकूअ़ है, सज्दा है, तशह्हुद है जिनका ता'ल्लुक़ इन्सान के जिस्म से है। नमाज़ के दौरान अल्लाह की ह़म्दो-ष़ना की जाती है, उसके कलाम की तिलावत की जाती है, ज़िक्र व अज़्कार किये जाते हैं और दुआ़एं माँगी जाती है; इनसे इन्सान की रूह का तज़्किया (शुद्धिकरण) होता है। नमाज़ की शुरूआ़त **'अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा है)'** कहकर होती है और इसका इख़्तितताम (समापन) **'अस्सलामुअ़लैकुम व रह्मतुल्लाह (तुम पर अल्लाह की त़रफ़ से सलामती हो)'** कहकर होता है। इसलिये यह कहा जा सकता है कि दुनिया में इ़बादत के ता'ल्लुक़ से (या'नी पूजा-पाठ से सम्बंधित) जितने भी त़रीक़े राइज़ (प्रचलित) हैं, उनमें सबसे बेहतर त़रीक़ा नमाज़ है।

नमाज़ एक कामिल (सम्पूर्ण) इ़बादत है। बन्दा अपने रब के सामने पाक-स़ाफ़ व बावुज़ू होकर ह़ाज़िरी देता है। वो नमाज़ से पहले या नमाज़ के बाद किसी क़िस्म का कोई चढ़ावा नहीं चढ़ाता। ह़क़ीक़त भी यही है कि एक बंदा अपने रब को क्या दे सकता है, जबकि वो तो ख़ुद अपने लिये दुनिया व आख़िरत की भलाई माँगने आया है।

नमाज़ की ख़ूबियाँ

जब कोई इन्सान नमाज़ पर गौर करे तो उसे मा'लूम होता है कि नमाज़, बंदे और अल्लाह के बीच एक ख़ुसूसी ता'ल्लुक़ (विशेष संबंध) क़ायम करती है। नमाज़ इन्सान के मन में बंदगी का सच्चा जज़्बा पैदा करती है। नमाज़ की कुछ चुनिंदा ख़ूबियों पर ग़ौर करें,

- **हर मुस्लिम पर दिन-रात में पाँच बार नमाज़ अदा करना फ़र्ज़ है। नमाज़ अदा करने से पहले पाक होना शर्त है। पाक होने के साथ-साथ हर नमाज़ से पहले वुज़ू करना ज़रूरी है, बिना वुज़ू के नमाज़ नहीं होती। या'नी नमाज़ इंसान को पाक व स़ाफ़ रहने की आ़दत डालती है।**
- **नमाज़ पढ़ने वाला ख़ाली हाथ मस्जिद जाता है। 'अल्लाहु अक्बर' कहकर तक्बीर के दौरान हाथ उठाकर एक मुस्लिम अपने-आप को अल्लाह के ह़वाले करता है। इसके बाद वो नमाज़ी अल्लाह की ह़म्द व ष़ना (प्रशंसा-वंदना) करता है। यह इक़रार करता है कि एक अल्लाह ही उसका रब (पालनहार) है और वही उसके आ'माल (कर्मों) का ह़िसाब लेने वाला है। फिर वो उसके सामने आजिज़ी (विनीत भाव) से सिराते-मुस्तक़ीम (सत्य मार्ग) चलाने और गुमराही से बचाने की दुआ करता है। इस त़रह नमाज़ी अल्लाह की बंदगी (दासता) का इक़रार करता है।**

नमाज़ियों के लिये 25 बशारतें

क़ुर्आन-ह़दीष़ की रोशनी में

क़ुर्आन व ह़दीष़ में, जहाँ एक ओर नमाज़ न पढ़ने वालों, नमाज़ में ग़फ़लत बरतने वालों, नमाज़ की ह़िफ़ाज़त न करने वालों, या नमाज़ में रियाकारी (दिखावा) करने वालों के लिए बहुत सारी डराने वाली बातें बयान हुई हैं वहीं दूसरी ओर नमाज़ियों के लिये बहुत सारी बशारतें (शुभ-सूचनाएं) बयान हुई है। जिनको जान लेने के बाद यक़ीनन हर उस शख़्स जो मोमिन है, उसका दिल यक़ीनन इनको पाने के लिये बेताब हो उठेगा। लिहाज़ा नमाज़ की ख़ासियतों से जुड़ी कुछ बशारतें क़ुर्आन व ह़दीष़ की रोशनी में आपके इ़ल्म में इज़ाफ़े (बढ़ोतरी) के लिये बयान की जा रही है। हमें अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला की ज़ात से क़वी (मज़बूत) उम्मीद है कि ये बशारतें आपके अंदर नमाज़ों की पाबंदी पैदा करने का जोश (उत्साह) पैदा करेंगी, इंशाअल्लाह!

01. नमाज़ अल्लाह के नज़दीक सबसे पसंदीदा अ़मल है

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) अन्हु बयान करते हैं,

'मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से पूछा कि अल्लाह के नज़दीक कौनसा अ़मल सबसे पसंदीदा है ?'

आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'नमाज़ को उसके स़हीह़ वक़्त**